उमापतिक 'मैथिलेश'क अप्रामाणिकता

डा० श्री रामदेव झा

उमापति उपाध्याय प्रसिद्ध छथि पारिजात हरण नाटक लऽ कऽ । हुनक अनेको स्फुट गीत सभ सेहो उपलब्ध अछि, किन्तु विशेष लोकप्रियता नाटकेकेँ छनि । एतेक प्रसिद्ध आ लोकप्रिय होइतो हुनक आश्रयदाताक समय आ परिचयक सम्बन्धमे कोनो साधार निश्चयात्मकता नहि आबि सकल अछि ।

यदि हुनक आश्रयदाताक सम्बन्धमे कोनो निश्चित प्रमाण भेटि सकय तँ समय आ परिचयोक निर्धारिण करब सम्भव अछि । किन्तु सर्वाधिक विवाद हुनक आश्रयदाताकेँ लऽ कऽ अछि ।

पारिजातहरण नाटकमे ओ अपन आश्रयदाताक उल्लेख बेर-बेर कयने छथि । सूत्रधारक प्रस्तावना वाक्यमे नाट्याभिनयक आदेष्टा रुपमे 'हिन्दूपति हरिहर देव'क उल्लेख अछि । ओहि वाक्यमे अनेक महत्त्वपूर्ण विशेषणसँ हिन्दूपति हरिहरदेवकेँ विभूषित कयने छथि । ओ वाक्यांश अछि--

'आदिष्टोऽस्मि, यवनवनच्छेदन करालकरवालेन, विच्छेद गत चतुर्वेदपथ प्रकाशक प्रतपिन, भगवतः श्री विष्णोर्दशमावतारेण, हिन्दूपति हरिहरदेवेन...।

भगवतीवन्दना विषयक मंगल गीतक पश्चात नान्दी श्लोकमे हिन्दूपतिक मंगलकामना कयल गेल अछि । श्लोक निम्नरूपक अछि--

क्षोणी यस्यर दं मृणालशकलं मूलार्णवः पल्वलम्
स्वर्गङ्गा वसनं विभाति गगनं कस्तूरिकालेपनम् ।
चन्द्रश्चारु ललाट अन्दनमुडुश्रेणी गता माल्यताम्
तेन श्री धरणीधरेण हरिणा हिन्दूपतिः पाल्यताम् ॥

गीत सभमे १७ ठाम 'हिन्दूपति'क उल्लेख कयल गेल । एहिमे १४ गोट गीतमे 'हिन्दूपति'क संग हुनक रानी माहेश्वरी देवी (चेतनाथ झाक संस्करणमे एक ठाम 'पटमहिषी' देवी) जगमातादेइ तथा महारानीक सेहो, उल्लेख अछि ।

नान्दीक द्वितीय श्लोकमे 'मैथिलेश'क प्रयोग करैत कहल गेल अछि जे ओ अहाँ सभक (प्रेक्षकगणक) रक्षा करथु--

यस्यास्यं पूर्णचन्द्र स्ववचनममृतं
दिग्जय श्रीश्चलक्ष्मीः
दोःस्तम्भः पारिजातो भ्रुकुटि कुटिलता सङ्गरे कालकूटः ।
तीव्रः तेजोऽग्नि रौर्वः पदभजनपरा राजराज्यस्तटिन्यः
पारावारो गुणानामयमतुलगुणः पातु वो 'मैथिलेशः' ॥

जार्जग्रियर्सन 'हिन्दूपति' एवं प्रस्तावना वाक्यमे देल विशेषण तथा 'मैथिलेश' शब्दक बलपर उमापतिक आश्रयदाता कर्णाटवंशीय अन्तिम राजा हरसिंह देवकेँ माललनि । किन्तु हरसिंह देवक नामान्तर हरिहरदेव नहि छलनि । यदि से रहैत तँ कोनो ने कोनो स्रोतसँ एकर पुष्टि अवश्य भेल रहैत । संगहि हरसिंह देव 'हिन्दूपति' विरुदसँ भूषित छलाह तकरो कोनो प्रमाण नहि । कमसँ कम चण्डेश्वर तँ अवश्ये एकर उल्लेख करितथि । पारिजातहरणमे उल्लेख कयल गेल रानियो सभमेसँ ककरो नाम हिनका संग नहि भेटैछ । धूर्त्तसमागम नाटकक मैथिली गीत सभमे भणितामे ठाम-ठाम हरसिंहक उल्लेख अछि, परंच 'हिन्दूपति' विरुद वा रानी सभक नाम नहि अछि । नेपालक मल्लकालीन शिला लेख बंशावली आ नाटक सभमे कर्णाटवंश एवं हरसिंहक चर्चा आयल अछि परंच ओतहु उपर्युक्त नामान्तर 'हरिहर' विरुद 'हिन्दूपति' एवं रानी सभक कोनो संकेत नहि अछि । अतः ग्रियर्सनक विश्वासक सबल आधार 'मैथिलेश' शब्द टा अछि ।

प० चेतनाथ झा हरिहरदेवकेँ मकमानी (तराइ नेपाल)क राजा मानलनि किन्तु मकमानीक राजा 'मैथिलेश' रूपमे मान्य छलाह वा नहि ताहि सम्बन्धमे किछु ने कहलनि । इतिहासो किछु ने कहैत अछि । मकमानीक राजा वस्तुतः मैथिलेश छलाहो ने ।

डा० जयकान्त मिश्र बुन्देल खण्डक राजा 'हिन्दूपति सिंह'केँ उमापतिक आश्रयदाता मानैत तर्क देलनि जे मैथिल-विद्वान लोकनि हुनक आश्रयमे रहैत छलाह तेँ हुनका 'मैथिलेश' कहल गेल होयतनि । एहि ठाम एकटा बात ध्यान देबाक थिक जे उमापतिक आश्रयदाताक नाम छलनि 'हिन्दूपति' विरुद युक्त 'हरिहरदेव' एवं बुन्देलखण्डक राजाक नाम छल 'हिन्दूपति सिंह' । तेँ दुनू एक कोना भेल ? दोसर गप्प, जे दू चारि मैथिलकेँ आश्रय देनिहारकेँ 'मैथिलेश' सन गरिमामय विशेषण कोना देल जा सकैत छल ?

एकटा आर तर्क देल जाइत अछि जे आश्रयदाता बुन्देल खंडक राजा छलथिन, किन्तु अपन मातृभूमिक राजा राघव सिंहक (१८ म शतीक पूर्वार्द्ध) सेहो उल्लेख 'मैथिलेश' शब्दसँ कयलनि । तखन प्रश्न उठैत अछि जे एके गोट कृति दुइ गोट भिन्न-भिन्न देशक राजाकेँ समर्पित करब कोना उचित छल ? मध्यकालक स्थितिमे एहन करब की संभव छल ?

पं० चेतनाथ झा आ डा० जयकान्त मिश्रक अभिमतमेसँ कोनोकेँ मान्यता देल जाय, तथापि दुहू नान्दी श्लोकमे दुइ भिन्न-भिन्न राजाक उल्लिखित स्थिति मानहि पड़त । किन्तु, एहिसँ उत्पन्न विसंगतिपर अद्यापि कोनो ध्यान नहि देल गेल अछि । पहिल श्लोकमे कहल गेल अछि जे धरणीधरसँ 'हिन्दूपति' पालित होथु एवं दोसरा श्लोकक भाव अछि जे अतुलगुणयुक्त 'मैथिलेश' अहाँ सभक रक्षा करथु । वराह रूप विष्णु हिन्दूपतिक रक्षा करथुन आ विष्णुरूप मैथिलेश अहाँ सभक रक्षा करथु--एहन उक्ति तखने संगत भऽ सकैछ जखन हिन्दूपति हरिहर देव ओ मैथिलेश एकहि व्यक्ति होथि । मिथिलामे 'हिन्दूपति' विरुद युक्त 'हरिहरदेव' नामक 'मैथिलेश'क-अस्तित्वक कोनो प्रमाण एखन धरि नहि भेटल अछि । यदि मैथिलेशकेँ कर्णाटवंशीय अन्तिम राजा हरसिंह देवक हेतु प्रयुक्त मानल जाय तँ मानऽ पड़त जे सुमति-सुगुरु-कविपण्डित मुख्य उमापति उपाध्याय अपन आश्रयदाताक नाम अशुद्ध लिखलनि । किन्तु कथमपि ई धारणा मान्य नहि भऽ सकैछ । संभव अछि प्रतिलिपिकारे अशुद्धि कयने हो । किन्तु ईहो अमान्य लगैछ कारण एखन धरि पारिजात हरणक जतेक हस्तलेख भेटल अछि सभमे 'हिन्दूपति हरिहर देवे' पाठ भेटैत अछि । अतः ग्रियर्सनक मत तँ सर्वथा अमान्य भऽ जाइत अछि ।

जयकान्त बाबूक मत एहि हेतु अमान्य अछि जे उमापतिक आश्रयदाताक नाम छलनि 'हिन्दूपति हरिहर देव' आ बुन्देल खंडक राजाक नाम छल 'हिन्दूपति सिंह' । नाममे अन्तर स्पष्टे अछि । एहू मतमे वैह दोष अछि जे ग्रियर्सनक मतमे ।

हम संस्कृति भारतवर्षक . . .

: श्री उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन' :

गहन विजन गिरि-गुफा, तपोवन, पुण्य-सरित, तीर्थ-स्थल
हमर अवतरण-भूमि, त्याग-तप हमर विकासक संबल
ऋषि-मुनिक दुलरैतिन धी हम, घुमलहुँ सगरो धरती
आभा-प्रभा खिरौलहुँ जग भरि की पाँतर, की परती
हम संस्कृति भारतवर्षक, जे शास्त्र-शस्त्रपर निर्भर
स्वार्थ गौण, परमार्थ मुख्य छल जाधरि, ताधरि जय-वर
शास्त्र-शस्त्रकेँ जखन एतऽ स्वार्थक दिस ठेलल गेल
तखन मान्यता-महिमा घटलै, देश दुर्दशित भेल

ककर कमण्डलु-जलमे बल से मन्त्रे धधरा लपटय ?
शिखा-सूत्र से ककर प्रतापी गंजक-भंजक बिलटय ?
कतऽ विप्र-विटु धन-वितृष्ण भऽ आइ ज्ञान-यशार्थी,
ऐहिक सुखकेँ लात मारि अध्यात्म-रसक छथि प्रार्थी ?
पथ-भ्रष्ट शासककेँ सैंतथि परशुराम के योद्धा ?
विश्वामित्रक 'अहं' जरय, से के वशिष्ठ तप-बोद्धा ?
कोनो द्रोणक शस्त्र-कला कय अर्जुन बना सकल अछि ?
बनय सर्प इन्द्र-नहुषो, से के जड़ भरत सबल अछि ?
अपन विभूति गमोय-बिसरि, दुर्दिन रहला परचारि
अग्रजन्मता डुबा-दहा ई झिटुकी बीछथि हारि

राज-धर्म छल तनु-असंगता, नहि प्रिय भोग-विलास
शास्त्र-शस्त्र-बल अरजि कुलोचित कर्तव्यक विन्यास
चामर-छत्रक छायातर मुद-मद कहियो नहि मानल
सौख्य, स्नेह वा दया, प्रिया की ? लोकाराधन जानल
वध्य पतित-पापी, अवध्य-कुल रहितो, रावण खंडित
सीखा-रेखा टपब अनर्गल, तेँ शम्बूको दंडित
दुष्ट ताड़का-शूर्पणखा-पूतना सदृशकेँ शासन
मर्यादा-वर्धन, जन-सेवन आ शान्तिक आश्वासन
ससरल-खसल दिव्य-पथसँ से गुड़कय, गूड़य झाम
प्रखर अराजकता व्यापृत अछि, अस्थिर स्थिति सभ ठाम

चेतह, हे ऋषि-मुनिक वंशधर, निज तपबल चमकाबह
ज्योति प्रतिष्ठित करह वशिष्ठक, ब्रह्मदण्ड झमकाबह
गुरुकुल चलय तेहन जहिमे शिक्षा भेटय कल्याणी
नैतिकता होअय अर्जित, सभ सीखय ऋषि-मुनि-बाणी
पावन 'कुल'सँ समुदित होअय उज्ज्वल तेहन चरित्र
रखय मात्रकेँ नहि, जगतीकेँ करय सदैव पवित्र
शास्त्र-शस्त्रमे तेहन होअय पुनि शिक्षण तथा प्रशिक्षण
आर्य-संस्कृतिक भेरी बाजय, राष्ट्रो बढ़य प्रतिक्षण

तोँ छह मति-मस्तिष्क, शरीरक संचालन के करतै ?
तोँ खसलह, खसलै-भसलै सभ अंगे, कोना सम्हरतै ?
लैह कमण्डलु-बल्कल, त्याग-तपक गरिमा दरशाबह
नहि चाही तोरा किछु, जग-हित ले' तोँ तेज जगाबह
व्रत-संयम तोहर विशेषता, ज्ञान-चरितबल शुभ क्रम
'विप्रदेह नहि क्षुद्र काम ले' घोषित अछि निगमागम

राज-धर्म जागय पुण्योज्ज्वल स्वार्थ-सौख्य-निरपेक्ष
शास्त्र-शस्त्र दमकय, बमकय शौर्यक क्रम शुचि-सापेक्ष
बुद्धि-बलक संयोगेँ धरतीपर उतरत सुर-लोक
धन-सेवा अनुगत चलतै, नहि रहत कतहु दुख-शोक
'ऊठह-जागह' झट, नहि तँ 'वर पाबि निबोधन' सपने !
माथ-बाँहि दुर्गति-गत जाधरि ता की उन्नति जपने ?

सत्ययुगक अभ्युदय कठिन, तैयो साहस नहि हारह
मंगल-पथपर जतबे बढ़बह, सैह लाभ अवधारह
युग-गति लग क्यो देह ओड़य, क्यो युग-बसातकेँ मोड़य
रे युगादिसँ युग-स्रष्टा तोँ, धिक्, तोरा क्यो तोड़य

पं० चेतनाथ झाक मत मान्य भऽ सकैछ किन्तु ओहिमे बाधक अछि 'मैथिलेश' शब्द । ऊपरे कहल अछि जे मकमानीक राजा 'मैथिलेश' नहि भऽ सकैत छथि ।

तीनू मतक पर्यालोचनमे 'मैथिलेश' सर्वाधिक विवादास्पद बिन्दु बनि कऽ उपस्थित होइत अछि । एहि क्रममे एकटा आर तथ्य ध्यान देबाक योग्य अछि जे नान्दीक दोसर श्लोकमे 'मैथिलेश'क उल्लेख रहितो गीतमे कतहु एकर उल्लेख नहि अछि ।

अतः 'मैथिलेश' शब्दक उल्लेखक प्रामाणिकता विचारणीय भऽ जाइत अछि । पारिजात हरणक जे छपल संस्करण सभ अछि ताहि सभमे एके रंग पाठ अछि तेँ ओहिसँ कोनो नव तथ्यक उद्घाटन संभव नहि । एहि हेतु अन्यस्रोतक सामग्रीक आधार अपेक्षित एहन किछु सामग्री हमरा दृष्टिपथपर आयल अछि जाहि आधारपर 'मैथिलेश'क प्रयोग अप्रामाणिक सिद्ध होइत अछि ।

हमरा लगमे पारिजात हरणक एकटा प्राचीन हस्तलेख अछि । एकर आयु डेढ़ सय वर्षसँ कम नहि होयतैक । ई प्रति कोनो एहन आदर्श प्रतिसँ उतारल गेल छल जकर आद्यन्त खण्डित छल होयतैक । तेँ आरम्भक मङ्गल गीत आ प्रथम नान्दीश्लोक अनुपस्थित अछि । दोसर दिस, अन्तमे धनञ्जयक पारिजात तरु लेने श्रीकृष्णक प्रवेश भेलापर समाप्त भऽ जाइत अछि ।

प्रकाशित संस्करण सभमे द्वितीय नान्दीश्लोकक अन्तिम चरण अछि:—
'पारावारो गुणानामयमतुलगुणः पातु
वो मैथिलेशः ।'

परंच, हमरा लगक हस्तलेखमे मैथिलेशक स्थानमे 'हिन्दूपति' पाठ स्पष्ट अछि । ओकर पाठ निम्नरूपक अछि—
पारावारो गुणानामतुल रसमयः पातु
हिन्दूपतिर्वः ।'

'मैथिलेश' प्रयोगपर प्रश्न-चिह्न लगयबा लेल एतबे प्रमाण पर्याप्त नहि मानल जा सकैत अछि । अतः अन्यो स्रोतक प्रमाणसँ एकर सम्पुष्टि अपेक्षित भऽ जाइछ ।

बिहार राष्ट्रभाषा परिषद (पटना) हस्तलिखित पोथीक विवरण प्रकाशित कयने अछि । ओकर छठम खंडमे बिहार रिसर्चसोसाइटी (पटना) द्वारा खोजमे उपलब्ध प्राचीन हस्तलिखित पोथीक विवरण देल गेल अछि । एहि खण्डमे सौराठ ग्राम वास्तव्य म० म० रुञ्जे-मिश्रक घरमे स्थित 'पारिजात हरण'क एक प्राचीन प्रतिक विवरण देल गेल अछि ।

(शेष पृष्ठ २४ पर)

मकमानी राजसभामे मैथिली साहित्य

: डा० श्री रामदेव झा :

प्रमाणक आधारपर सिद्ध भऽ गेल जे उमापति उपाध्याय मकवानपुर वा मकमानीक राजा हिन्दूपति हरिहर देवक आश्रित छलाह। हरिहरदेव ओ हुनक पुत्र छत्रपति सेनक आश्रयमे रहैत ओ नाटक एवं गीतक रचना कयने छलाह। परन्तु की ओ एकसरे मैथिली साहित्यकार छलाह ओहि राज सभामे ? ई एकटा स्वतन्त्र अनुसन्धानक विषय थिक आ एहि दिशामे अनुसन्धाताल़ोकनिक अग्रसर होयबाक प्रयोजन अछि।

परन्तु उमापतिक रचनासँ भिन्नो कतोक एहन गीत सभ उपलब्ध भेल अछि जकर रचना मकमानीक राज-परिसरमे भेल छल। हमर मित्र प्रफुल्लकुमार सिंह मौन मोरंग-पदावली नामसँ किछु गीतक संकलन कयने छथि जाहिमे कतिपय प्रकाशितो भेल अछि। ओहिमे, संभव अछि, एहनो गीत सभ हो जकर रचना सेन राजवंशक वा मकमानीक आश्रयमे भेल हो। यद्यपि किछु निश्चय पूर्वक नहि कहल जा सकैत अछि जे कोन-कोन गीत एहि कोटिमे आबि सकैत अछि।

एम्हर अनुसन्धानमे देवनाथ कविक एकटा गीत भेटल अछि जे स्पष्टे मकमानीक आश्रयमे रचित भेल छल। कवीश्वर चन्दा झाक संग्रहमे देवनाथ कविक एक गोट गीत उद्धृत भेटैत अछि जे निम्न रूपक अछि—

जों हम जनितहुँ तनितहु
उपजत मदन बेआधि।
बाहु फाँस लय फसितहुँ
हँसितहुँ अभिमत साधि॥
सुमुखि भइए हसि हेरितहुँ
फेरितहुँ सखितन खेद।
मनसिज शर नहि सहितहुँ
रहितहुँ हम निरभेद॥
परसनि भय रति सजितहुँ
बजितहुँ लाज नवारि।
कय परिरंभन गबितहुँ
भरितहुँ गुण अवधारि॥
अजस सुयश कय गुनितहुँ
सुनितहुँ नहि उपहास।
मनओ नहि परिहरितहुँ
करितहुँ मन न उदास॥
नारि मनोरथ अभिमत
शत शत रहस निरूप।
कवि देवनाथ रसिकमणि
मकमानी बुझ भूप॥

नगेन्द्रनाथ गुप्त एहि गीतकेँ मिथिलाक पद कहिकऽ विद्यापतिक भणितामे ग्रहण कयने छथि। समस्त गीतक पाठ तँ सर्वथा यैह अछि किन्तु भणितामे देने छथि—

कवि विद्यापति गाओल
रस बुझ सिवसिंह भूप॥

नगेन्द्र बाबूक संग्रहमे मिथिलाक पद कहि कऽ जे गीत सभ देल अछि से सभ चन्द्र कविक संग्रह-पोथीमे सेहो देखल जाइत अछि। से आनो कविक गीतकेँ गुप्त महोदय विद्यापतिक नामपर चला देने छथि ई तँ सर्वविदित तथ्य अछि। ईहो गीत अवश्ये चन्दा झाक संग्रहसँ लेल गेल किन्तु भणिता बदलिकऽ। मित्र-मजुमदार सेहो गुप्त महोदयक अनुसरण करैत ग्रहण कयलनि अछि किन्तु विद्यापतिएक थिकनि ताहिमे तारतम्य अवश्य उपस्थित भऽ गेल छलनि तेँ गीतक सम्बन्धमे विशेष टिप्पणी दैत कहमे छथि— "ई पद कोनो प्राचीन पुस्तकमे नहि पाओल जाइछ। नगेन्द्रनाथ गुप्त एकरा लोकक मुखसँ सूनि कऽ संग्रह कयने छलाह। तेँ एकर भाषा नवीन अछि।"

राजपण्डित बलदेव मिश्रक लगमे जे चन्दा झाक पोथा छलनि ताहिमे गीत देवनाथक भणितामे हमरा भेटल। स्वर्गीय रमानाथ झाक लगमे चन्दा झाक जे पोथा छलनि ताहूमे ई गीत वर्त्तमान छल जकरा उतारि कऽ प्रो० वेदनाथ झा हमरा उपलब्ध करौने छलाह। दुनूमे कोनो अन्तर नहि अछि। स्वर्गीय दिनकरदत्त मिश्र (सरिसव) सेहो मैथिली गीतक संग्रह कयने छलाह। ओहूमे ई गीत अछि। ओहिमे किछु पाठान्तर देखल जाइछ किन्तु कोनो प्रकारक भणिताक अभाव छैक।

अतः कवीश्वरक हस्तलेखक आधारपर हम एहि गीतकेँ देवनाथ कविक कृति मानैत छियनि। देवनाथ कविक यथार्थ परिचय निश्चित नहि कयल जा सकल अछि। उपयुक्त गीतक भणितासँ स्पष्ट अछि जे ई मकमानी राज्यक आश्रयमे छलाह। परन्तु ई 'मकमानी-भूप रसिकमणि' के छलाह से अव्यक्त अछि।

देवनाथ कविक एक टा देवी-वन्दना-गीत 'मैथिल भक्त प्रकाश'मे सेहो संकलित भेटैत अछि। देवी-वन्दनाक ओ गीत अछि—

नील वरनी शम्भु घरनी
छिटक छवि जिमि दामिनी।
पाओ नूपुर रवय किंकिणि
सुरब सुरनर मोहिनी॥
कठिन खड्गहि लीन दुर्ग
स्रवन झलकय टंकिनी।
अरुण नयना हसित बयना
संग कोटिस योगिनी॥
चन्द्रभाल भुजंग भूषित
करहु असुर निखंडिनी।
विन्ध्यवासिनि होउ दाहिनि
सुनहु हे भव पारिनी॥
भूप से द्रिपनाथ-सुत
देवनाथ सहित निवासिनी॥

भणितामे 'भूप द्रिपनाथ सुत'क चर्चा अछि। ई के, से नहि जानि। किन्तु पहिल गीतक आधारपर एहू राजाकेँ मकमानी वा ओकर शाखा राज्यमे खोज करब अपेक्षित लगैत अछि।

जाइछ जे विद्यापतिक भनितामे उल्लिखित बैजलदेव चौहानवंशी राजपूत पटनाक शासक छलाह मुदा श्लोकसँ ईहो सूचित होइछ जे विक्रमादित्य राजाक पुत्र 'बैजलदेव' पटनामे राजा छलाह। एहू प्रसंग अन्वेषण अपेक्षित अछि। हमर मुख्य तात्पर्य एहूठाम ई अछि जे देशावलि विवृतिक रचयिता विद्यापतिक समस्त कालिक छलाह। ईहो भऽ सकैछ जे ओहि ग्रन्थमे भूपरिक्रमणक अवशिष्ट भागक किछु अंश हो। भूपरिक्रमण जकाँ देशावलि विवृतिक सेहो महत्त्व अछि। देशावलि विवृतिक विभिन्न प्रतिलिपिक राजकीय स्रोतसँ फोटो करबाए गवेषणापूर्ण ओकर प्रकाशन होयबाक चाही। तखन दुनू पुस्तकक तुलनात्मक अध्ययन एवं गवेषणाक मार्ग प्रशस्त होयत जाहिसँ अमूल्य सांस्कृतिक निधि प्रकाशमे आओत।

उच्च विद्यालय अन्धराठाढ़ी जि० मधुबनी।

घूरिकऽ ने ताकय

श्री श्रीमन्त पाठक

भटकि बाट थाकल
बटोहीकें झाँकय

स्थितिक बोध बिसरायल
स्मृतिक तन्तु ओझरायल
क्षत-गत मन प्राण-प्राण
बुद्धि बेलि कुण्ठायल

आवृत मन घन घमण्ड
ध्वंस-राग गाबय
भावि अंधकूप झाँपि
पंगु प्राण काँपय

उद्धत बातास घात
सहि न सकय खिन्न गात
सूखल तरु-पात सदृश
निर्जन थल काँपय

फाटल पट तार-तार
जागल तन हार-हार
फूजल यथार्थ वृत्त
हारल मन झाँपय

साधल स्वर मूक भेल
खीचल शर चूकि गेल
विलटल निष्फलताकें
चेतनता नापय

टूक टूक टूटल सन
फूटल सन मन दर्पण
एक विम्ब बनि अनेक
बहु विधि भ्रम बाँटय

कुसुमित किंसुक विशाल
जिनगी-शुक सेवि डारि
लोल-घात उड़ल दूर
घूरिकऽ ने ताकय

ग्रा० मजौना पो० नीरपुर जि० समस्तीपुर।

एक टा आर गीत उपलब्ध अछि मिथिला-गीत-संग्रह (भाग—४, गीत-८) मे। विरहिणी नायिका दक्षिण-पवनकें सम्बोधित कऽ अपन विरह-संवाद प्रियतमकें प्रेषित करैछ। एहि गीतक भणित चरणमे देल अछि—

राजा हिन्दूपति परवाने सुलताने।
जनि देल पिआ मोर आने वरदाने।

एहि भणितामे 'राजा हिन्दूपति सुलताने' स्पष्टतः आश्रयदाताक नाम थिक। श्री नरेन्द्रनाथ दास मिथिलांक (मिथिला-मिहिर)क अपन निबन्ध 'मिथिलेशलोकनिक मैथिली कविता'मे ई गीत किछु भिन्न पाठान्तरक संग निम्न रूपक टिप्पणी-पूर्वक उद्धृत कयने छथि—

"एक पोथीमे हमरा एक प्राचीन गीत भेटल अछि जे मकमानीक राजा हिन्दूपतिक रचना थिक।"

ओ, गीतक भणिताक चरण एहि रूपक देने छथि—

राजा हिन्दूपति मखमानी।
जनि देलनि पहु मानी॥

हमरा जे एहि गीतक पाठ भेटल अछि से निम्न प्रकारक अछि—

दछिन पवन तोहें जाहे
अवगाहे
जहँ रे वसथि मोर नाहे
जाइत देखल पथ काने
अनुमाने
मदने साजल पचवाने।
नयन ढरकि परु नीरे।
भिजु चीरे।
पिअ विनु दगध शरीरे॥
परदेश रहल कन्हाई।
नहि आई।
रमनि खसलि मुरुछाई॥
कहबन्हि हुनि मोरि विनती।
जगरीती।
बड जन नहि तेज प्रीती॥
नृप हिन्दुपति सुलताने।
परमाने।
जनि देलनि वरदाने॥

तीनू ठामक भणिताक चरण अपूर्ण अछि। ई हिन्दूपतिक रचना नहि थिकनि। हुनक आश्रित कविक थिकनि। संभव अछि जे ई गीत उमापतिहिक होनि।

उपर्युक्त गीतक रचयिता मकमानी राजा हिन्दूपति हरिहरदेवकें मानब निस्सन्दिग्ध नहि होयत। परन्तु मकमानी राजालोकनिक मैथिलीमे काव्य-रचना करब असम्भव नहि अछि। नेपालक राष्ट्रिय अभिलेखालयमे रक्षित 'नानाराग गीतम्' नामक गीत-संग्रहमे एहि सम्भावनाक हेतु आधार उपलब्ध भेल अछि। ओहि संग्रहमे राय राघव ओ राय हरिहरक भणितामे एक-एक गोट गीत भेटैत अछि। राय राघवक भणित गीत अछि—

हाँ सजनि लो
आजु मुरलि घन घन वाजे।
न जानें विनोद राय कोण दिग साजे॥
मुरलिक रव सुनि श्रवण विकारे।
सें बंधु सजनि देखि हृदय चंचरे॥
कलसिते पानि भलिवो आनि घरे।
ए सासु ननंद आडल कि बोलव आने॥
राय राघव कह श्रवण गुण जाने।
हरि के चरण छादि गति नहि आने॥

हिन्दूपति हरिहरदेवक पिता छलाह राघव नरेन्द्र से सिद्ध भऽ चुकल अछि। उपयुक्त गीतक रचयिता राघवक संग 'राय विशेषणसँ कविक राजत्व सूचित होइत अछि। तें ई राय राघव कमानीक राघव नरेन्द्र भऽ सकैत छथि।

रायहरिहरक भणित गीतमे नायिकाक सौन्दर्यक सुन्दर वर्णन कयल गेल अछि—

देखरि धनि अनुपम कान्ति।
मदने जतने सिररिजलि कति भाँति॥
ध्रु॥

(शेष पष्ठ २३ पर)

सात सालक
ायल जाय ।
य आ धनक
तैक । हमरा
कगुआमे बाहर
ं छल, मुदा
सी आग्रहपर
आनन्द लेबऽ
क टा बिल्ला
त देरी एक टा
, लाल कयने
ः ओकर कंट्रोल
कते रहि गेलहुँ
सेहो फटिकऽ
। पुरान गेल तँ
मुदा कतऽसँ ?
पुरनका कपड़ा
ला पट्टी बनत ।
तकरा होश नहि
छलैक ओकरा
दिन देखलहुँ जे
छि । लोकसभकेँ
योजन नहि रहि
जोशक ई बुद्ध
माप्त भेल रहय
नचिह्न अछि ।

क

! अपनेकेँ एक
ला पहिरने देखने
पने कहिया तोड़ि
उठयबाक हेतु क्यो
धैर्य राखू जखन
ला उठयबाक हेतु
वा प्रस्तुत भऽ जाइत
उठावऽवला अवससे

ऽएक कानि रहल छी?
हने रही जे अपनेक
हर अहित ले' नहि
ने' भऽ रहल अछि ।
सिक्कापर चढ़ा देने
य जे छी सभांगपर

पेड़ा छहरक ठीकेदारीक संगहि संग बुद्धिक ठीकेदारी सेहो कऽ रहल छी सुनल जे एहि ठीकेदारीमे अपने बेस कमयलहुँ अछि ।

—ई नबाबी यात्रा करब कहियासँ शुरू कऽ देलिएक ? मोन अछि ने अपने पढ़ैत रही वा पढ़ाइक लाथ अपन पूज्य पितासँ पाइ लऽ कऽ एम्हर ओम्हर घूमैत रही । ई तँ प्रसन्नताक गप्प जे अपने आप स्नातकक प्रतिनिधित्व करबाक सामर्थ रखने छी ।

महरैल भाया-झंझारपुर जि.—मधुबनी ।

मकमानी

(पृष्ठ १४ क शेषांश)

चिकुर उपर सोभ बंधन सारे ।
राहु उगिल जयिसे उग शशधरे ॥
ललित दशन वर मुख शशि गोरा ।
चाद किरण भ्रमे भ्रमय चकोरा ॥
राय हरिहर केओ पुरुव रंगे ।
वड पुण्ये पायिय धनि रस रंगे ॥

एहू ठाम गीत कवि 'हरिहर'केँ 'राय' पदवी देल गेल छनि । ई राय हरिहर मकमानी राजा, उमापतिक आश्रयदाता हिन्दूपति हरिहरदेव भऽ सकैत छथि ।

किन्तु एहि दिशामे आर अनुसन्धानक अपेक्षा अछि जाहिसँ मकमानी राजसभाक मैथिली-साहित्य-सर्जनक विस्तृत इतिवृत्ति जानल जा सकय । कवि उमापति ओ कवि देवनाथ मात्र ओतऽ आश्रय लेने होयताह से सहजे विश्वास नहि होइछ । आरो कविलोकनि सभ अवश्ये रहल होयताह । देवनाथ ओ उमापतियोक अन्य रचना सभक खोज अपेक्षित अछि ।

एहि प्रसंग चतुर चतुर्भुजक उल्लेख करब आवश्यक अछि । चतुर चतुर्भुज मोरंग राजसभामे रहिकऽ गीत गोपालक रचना कयने छलाह । अपन परवर्ती जीवन कालमे नेपालक मल्ल राज्याश्रयमे अनेको मैथिली गीतक रचना कयने छलाह । गीत गोपालक आरम्भिक प्रशस्ति श्लोकसँ ज्ञात होइत अछि जे ओ ओहि पण्डितराजक पुत्र छलाह जे मेदिनीगढ़मे बादशाह अकबरक अध्यक्षतामे आयोजित शास्त्रार्थमे विजयी भऽ कऽ बादशाहसँ पुरस्कृत भेल छलाह । ई पण्डितराज छलाह राय रघुनन्दन । पंजीग्रन्थमे राय रघुनन्दनक पुत्र चतुर्भुजक परिचयक प्रसंग 'मकमानी-पातिशाह' पदक उल्लेख कयल गेल अछि । एकर तात्पर्य स्पष्ट तँ नहि होइत अछि किन्तु चतुर चतुर्भुज मकमानीयो राज-सभासँ कोनो-ने-कोनो रूपमे अवश्य संपृक्त छलाह । अतः ओहि कालक हुनक रचना अवश्य होयबाक चाही जे अनुसन्धेय अछि ।

स्नातकोत्तर मैथिली
मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा ।

हेतु अपयशक भागी भेल छथि । सं एहू कथाक नायिका रुचिक प्रति सेहो इन्द्र अपन धृष्टता कयलनि । रुचिक यौवन आ रूपपर ओ विशेष रूपेँ आसक्त छलाह । रुचिक भाव-भंगिमा सेहो कामुकता आ चंचलतापूर्ण दृष्टिगोचर होइत छलनि । तेँ लेल महर्षि देवशर्मा सेहो सशंकित रहैत छलाह । सदिखन महर्षि सतर्क तँ रहिते छलाह किन्तु कखनो पत्नीकेँ आश्रममे एकसर नहि छोड़ैत छलाह । ताहिपरसँ इन्द्रक कुदृष्टि तँ रुचिपर छलनिये ।

संयोगसँ एक बेर महर्षिकेँ यज्ञमे भाग लेबाक हेतु कतहु बाहर जाय पड़लनि । किन्तु पत्नीक चिन्तासँ चिन्तित छलाह । विवश भऽ जाय पड़ल छलनि । कोनो काजमे मोन नहि लगनि । ओना तँ प्रदर्शन हेतु काज करितहि छलाह । सतत चिन्तित देखि महर्षिक प्रिय शिष्य विपुल हुनका चिन्ताक कारण पुछलकनि । महर्षि चिन्तित स्वरमे मोनक व्यथा कहलथिन । शिष्य विपुल, अहाँक गुरुपत्नी हमर चिन्ताक कारण छथि । हमर अनुपस्थितिमे ओ एकसरे रहतीह । आ हमरा भय अछि जे देवराज रुचिपर आसक्त इन्द्र कामुक आ छल विद्यामे निपुण अछि । कदाचित् मायाबलसँ ओ प्रच्छन्न रूपसँ आश्रममे आबि रुचिक संग संसर्ग ने कऽ लेथि । यैह हमर चिन्ताक कारण ।"

उमापतिक आश्रयदाता एवं स्थितिकाल

: डा० श्री रामदेव झा :

उमापति उमापतिक आश्रयदाताक सम्बन्धमे आब कोनो निश्चित निर्णय भऽ जयबाक चाही। एहि विषयमे हमर एक गोट निबन्ध 'उमापतिक 'मैथिलेश'क अप्रमाणिकता' बहरायल छल (मिथिला-मिहिर, २८ दिसम्बर १९७५)। ओहि निबन्धक समापनमे हम कहने छलहुँ "एक बेर मैथिलेश शब्द अप्रामाणिक सिद्ध भेलापर उमापतिक आश्रयदाताक परिचय सरल अछि। से फेर दोसर निबन्धमे। सम्प्रति, एहि निबन्धमे प्रस्तुत प्रमाण ओ निष्कर्षक सम्बन्धमे आरो विचार-मन्थन भऽ सकय तँ ओ निष्कर्षकेँ निर्भ्रान्त बनयबामे सहायके होयत।"

एतऽ ओही निबन्धक क्रममे उमापतिक आश्रयदाताक सम्बन्धमे सप्रमाण विचार करबाक हेतु प्रस्तुत छी। एहि मध्य पूर्वोक्त निबन्धपर दुइ गोट विद्वान् डाक्टर जयकान्त मिश्र (मैथिली-प्रकाश, जनवरी १९७६) तथा श्री धीरेश्वर झा 'धीरेन्द्र' (मिथिला-मिहिर, २७ जून १९७६) क प्रतिक्रियात्मक निबन्ध प्रकाशित भेल अछि। हमर निबन्ध जयकान्त बाबूक दृष्टिमे 'एकटा सुविचारित निबन्ध' थिक आ धीरेन्द्रजीक दृष्टिमे 'एक गोट भिन्ने विवाद ठाढ़' करब।

जयकान्त बाबू एहि बातपर अन्य-मनस्को भावसँ सहमत बूझि पड़ैत छथि जे पारिजात हरणक नान्दीक एकटा श्लोकमे 'मैथिलेश' शब्दक प्रयोग कविकृत नहि थिक। ओ थिक वस्तुतः परवर्त्ती प्रक्षेप। परन्तु बुन्देलखण्डक राजाहिन्दूपति उमापतिक आश्रयदाता छलाह—अपन एहि मतपर दृढ़ छथि। तथापि, ओहूमे हमरा द्वारा उठाओल शंकासँ सहमत छथि तेँ कहलनि अछि जे—"हँ एकटा मेओँ एखनो रहैछ। ओ थिक जे हिन्दूपतिकेँ 'हरिहर' सेहो नाम छलनि वा नहि।"

श्री धीरेन्द्रजी हमर निबन्धकेँ उत्तेजित मनःस्थितिमे पढ़लनि तेँ हमर स्पष्ट विचार ओ वाक्यकेँ बुझबामे भ्रान्त भऽ गेलाह। तँ हमर 'कोऽत्र दोषः'!

हमर पूर्वोक्त निबन्धमे ग्रियर्सनक मतक आलोचना ओ खंडन कयल गेल अछि। ओहिमे हमर कथ्य छल जे उमापतिक आश्रयदाता कर्णाट बंशीय राजा हरसिंह देबकेँ मानबामे बाधा ई अछि जे उमापतिक आश्रयदाता छलाह हिन्दूपति हरिहर देब। पारिजात-हरणमे हिनक पत्नी सभक नाम सेहो छनि। किन्तु कोनो स्रोतसँ ने 'हरसिंह'क नामान्तर 'हरिहर' भेटल अछि, ने 'हिन्दूपति' विरुदक प्रयोग हरसिंहक लेल कतहु भेल अछि अथवा ने पारिजातहरणोक्त रानी सभक नामक उल्लेख हरसिंह देवक संग भेल अछि। एही प्रसंग हमर वाक्य छल—नेपालक मल्लकालीन शिलालेख, वंशावली आ नाटकसभमे कर्णाटवंश एवं हरसिंहक चर्चा आयल अछि, परंच ओतहु उपर्युक्त नामान्तर 'हरिहर' विरुद 'हिन्दूपति' एवं रानीसभ कोनो संकेत नहि अछि।'

हरसिंहदेवक सम्बन्धमे कहल गेल ई उद्धरण ग्रियर्सनक भ्रान्तमतक निवारण करैत अछि। किन्तु धीरेन्द्रजी एहि उद्धरणकेँ उद्धृत करैत कहैत छथि जे ई उमापतिक आश्रयदाताक प्रसंग भ्रान्ति उत्पन्न करैत अछि, जखन कि हम हुनक यथार्थ आश्रयदाताक विषयमे कोनो चर्चा नहि कयने छी। केवल अन्यमत सभमे जे भ्रान्ति अछि से चर्चित ओ निवृत भेल अछि ओहि निबन्धमे। एतबा अवश्य जे धीरेन्द्रजी नेपालमे प्रकाशित 'सेन वंशावली'क चर्चा कऽ अपूर्ण उद्धरण दऽ कऽ हिन्दूपति हरिहरदेवक अस्तित्वक चर्चा कयलनि अछि। यदि ओहि सम्बन्धमे सुविचारित तथ्यात्मक निबन्ध लिखने रहितथि तँ हमरा ई निबन्ध लिखबाक आवश्यकते ने होइत।

सेनवंशावलीक हिन्दूपति हरिहरदेव मैथिलीक अनुसन्धातासँ पूर्वमे अपरिचित नहि रहलाह अछि। किन्तु हुनका कतहु 'मैथिलेश' कहल नहि गेल छलनि। ओना, धीरेन्द्रजी सेनवंशीलोकनि 'सत्ते मोनसँ मैथिलेश छलाह' से मानि लेलनि अछि, यद्यपि अनुसन्धानकर्ताकेँ अपन निष्कर्ष तथ्यक आधारपर बहार करक चाही, स्वच्छन्द मानसिक कल्पनाक आधारपर नहि। तेँ हम सेनवंशीलोकनिकेँ 'मैथिलेश' मानबाक समर्थनमे कोनो तथ्यपूर्ण आधार नहि देखैत छी।

किन्तु, हमर पूर्व प्रकाशित निबन्धमे देखल गेल अछि जे कोनो अन्य प्रान्तीय राजाक उमापतिक आश्रयदाता होयबामे जे 'मैथिलेश' शब्द बाधक छल से स्वयं अप्रामाणिक सिद्ध भेल अछि। नान्दीक जाहि श्लोकमे 'मैथिलेश' पाठ पारिजातहरणक संस्करण सभमे देखल जाइछ तकर मूलमे 'मैथिलेश'क स्थानमे 'हिन्दूपति' पाठ छल।

मैथिलेश शब्दक बाधकतत्वक निवारण भेलापर हिन्दूपति हरिहर देवकेँ उमापतिक आश्रयदाता मानब सरल भऽ जाइत अछि।

तखन जिज्ञासा उठैत अछि हिन्दूपति हरिहरदेवक परिचय ओ स्थितिकालक सम्बन्धमे। एहि सम्बन्धमे १९६५ ई० मे हमर मित्र प्रो० प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन' सर्वप्रथम सूचना देने छलाह। ओ विराटनगर कालेजमे प्राध्यापक पदपर रहैत मोरंगक परिसरक सर्वेक्षण कऽ विजयपुर, हिन्दूपतिगढ़ आदिक सेनशासक सम्बन्धी अनेक सूचना देने छलाह। ओहि सूचनाक आधारपर आगाँ अनसन्धान—कार्य करऽ लगलहुँ तँ बहुतो नवीनसूचना सभ उपलब्ध भेल। एकटा सूचना भेटल जे नेपालक राष्ट्रिय अभिलेखालयमे 'मकवानपुरीय नृपवंशावली' (सूची-१, क्रमांक-११४०) सुरक्षित अछि। १९६७ ई० मे हम स्वयं राष्ट्रिय अभिलेखालयमे जाकऽ खोज कयलहुँ तँ कर्मचारीलोकनि सूचना देलनि जे आरो अन्य वंशावलीक संग ईहो वंशावली 'सेन-वंशावली' नामसँ वीरलाइब्रेरी (राष्ट्रिय अभिलेखालय केर प्राक्तन् नाम) द्वारा प्रकाशित भऽ गेल अछि। तेँ मूल हस्तलेख देखब निष्प्रयोजन।

सेनवंशावलीक संगहि अन्यान्य सूचनाक आधारपर हम अपन थीसिस 'मैथिलीमे शैव साहित्य' (१९६९ मे पी-एच० डी० उपाधि हेतु पटना विश्वविद्यालयमे समर्पित तथा १९७० मे तदर्थ स्वीकृत) मे उमापतिक यथार्थ आश्रयदाता 'हिन्दूपति हरिहरदेव'केँ सिद्ध कयने छियनि।

नेपालमे मल्लराजवंशक शासन तँ काठमांड़क उपत्यका भागमे छलैक किन्तु सेनवंशक शासन पहाड़ ओ तराइ भागक समानान्तर पट्टीमे पश्चिममे पालपासँ लऽ कऽ पूर्वमे कोसीक पार मोरङसँ आरो पूब धरि छलैक। एहि क्षेत्रमे अनेकानेक सेनवंशी शाखा राज्यसभ छल। सेनवंशक विस्तृत परिचय हैमिल्टन अपन ग्रन्थ 'एन एकाउंट आँफ नेपाल'मे देने छथि। ओहि परिचयकेँ नेपाली इतिहासकार बालचन्द्र शर्मा अपन इतिहास 'नेपाल को ऐतिहासिक रूप – रेखा'मे पल्लबित कयलनि अछि किछु आरो नवीन तथ्यक आधारपर। डी० आर० रेग्मी महोदय सेहो 'मेडाइवल नेपाल'मे मल्लशासक ओ सेन-

शासकक सम्बन्धक प्रासंगिक उल्लेख कयलनि अछि ।

उमापतिक आश्रयदाताक प्रसंग एहि सभ सामग्रीपर विचार करबासँ पूर्व उमापतिक अपन कृतिमे प्रदत्त अन्तःसाक्ष्यक परिचय प्राप्त कऽ लेब समीचीन होयत ।

पारिजातहरणक प्रस्तावनामे सूत्रधार नाट्यप्रस्तावमे कहैत अछि––

'आदिष्टोऽस्मि,
यवनवनच्छेदनकरालकरवालेन,
विच्छेदगत चतर्वेदपथ प्रकाशक प्रतापेन
भगवतः विष्णोर्दशमावतारेण,
हिन्दूपति श्री हरिहर देवेंन . . . .'

एहिसँ पूर्व, प्रथम नान्दी श्लोकमे 'हिन्दूपति'क कल्याण-कामना वराह भगवानसँ कयल गेल अछि । दोसर नान्दी श्लोकमे प्रकाशित संस्करणक पाठ अछि तँ 'मैथिलेश' परन्तु आब सिद्ध भऽ गेल अछि जे ओहूमे 'हिन्दूपति'ए पाठ छल । पारिजातहरण नाटकमे २१ गोट गीत अछि । तीन गोट गीतमे आश्रयदाताक कोनो नाम नहि अछि (१, १४, १८) । एकटा गीत (४)मे 'सकल नृपपति' मात्र कहल गेल अछि । पाँच गोट गीतमे क्रमशः 'सकल नृपति पति' (२, १२, १३), 'सकल नरेश मुकुटमणि' (३), 'सकल जवन वन वर दावानल दसमदेव अवतारा, सकल नृपतिपति' (१६) विशेषणक संग हिन्दूपतिक उल्लेख अछि । शेष बारह गोट गीतमे सोझे 'हिन्दूपति' कहिकऽ उल्लेख अछि । (१० म गीतमे चेतनाथ झाक संस्करणमे आश्रयक उल्लेख नहि अछि किन्तु ग्रियर्सनक संस्करणमे हिन्दूपति-माहेसरिक उल्लेख अछि ।) एहि सभमे हिन्दूपतिक संग छओ ठाम 'जिउ' (जी) तथा एक ठाम 'देओ' शब्दक प्रयोग अछि ।

पारिजातहरणक गीतसभमे हिन्दूपतिक संग हुनक पत्नीसभक सेहो उल्लेख कयल गेल अछि । एहन चौदह गोट गीत अछि । छौ गोट गीतमे (६, ७, १० ग्रि०, ११, १६, २०) माहेसरि देवीक, तीन गोट गीतमे (३, ८, १७) पटमहिषी देवीक, तीन गोट गीतमे (५, ६, १५) जगमातादेवीक तथा एक गोट गीतमे (१२) महारानिक उल्लेख अछि । गीत संख्या १३ मे चेतनाथ झा-संस्करणमे पटमहिषीक नाम अछि तथा ग्रियर्सन-संस्करणमे माहेसरि देवीक । महारानिक अतिरिक्त सभक नाममे 'देई' शब्दक प्रयोग अछि । एक बात आर उल्लेखनीय अछि जे बिना हिन्दूपतिक नामक एकको गोट रानीक उल्लेख नहि कयल गेल अछि ।

उमापतिक कतिपय स्फुट गीतमे सेहो हिन्दूपतिक उल्लेख अछि किन्तु ओकर सभक चर्चा कोनो विशेष उपयोगी नहि । हँ, कविशेखर बदरीनाथ झा अपन 'गीत-रत्नावली' नामक संग्रहमे उमापतिक एकटा स्फुट गीत संकलित कयने छथि जकर भणिताक चरणमे 'छत्रपति भूप'क उल्लेख अछि ।

अन्तःसाक्ष्यक रूपमे एतबे सामग्री ओ सूचना उपलब्ध अछि आ एही आलोकमे मकबानपुरीय वंशावली तथा सेनवंशक इतिहासक परीक्षण करबाक अछि ।

राष्ट्रिय अभिलेखालयमे जे मकवानपुरीय वंशावली रक्षित अछि आ जे 'सेन वंशावली' नामक पुस्तकमे सेन शासकक अन्य बंशावली केर संग प्रकाशित अछि ताहिमे बीजी पुरुषक परिचयसँ आरम्भ कऽ सेन वंशक विभिन्न शाखाक परिचय देल गेल अछि । एहिमे प्रथम खंड मकवानपुरक हरिहरइन्द्रकद्वारा लिखबाओल गेल छल । कारण, एहि ठाम हरिहरक परिवारक परिचय दऽ कऽ अन्तमे कहल गेल अछि 'इति प्राचीन लेखन क्रमः' । परवर्ती वंशक शेष परिचय एहि वंशक अन्तिम राजा 'कामारिदत्त सेन'क द्वारा जोड़बाय जे नवीन प्रति तैयार करबाओल गेल, से प्रति राष्ट्रिय अभिलेखालयमे उपलब्ध अछि ।

ई वंशावली मूलतः मकवानपुरेक शासक द्वारा तैयार करबाओल गेल छल तकर सूचना आरम्भिक मंगलश्लोक देलाक पश्चात् निम्नलिखित श्लोक द्वारा देल गेल अछि––

'वंशावली श्री मकवानि भूपोरथौव विध्वंसकरी जनानाम् ।
शृण्वंतु तामद्य सभासु वंद्यामन्तः प्रयत्नादवधाय संतः ॥

अतः निश्चित होइत अछि जे अत्र-विवेच्य वंशावली मकवानी शासक हरिहर-इन्द्र द्वारा मकवानपुर शाखाक कीर्तन हेतु कोनो पंडित द्वारा निर्मित भेल छल । तँ पूर्ववर्ती परवर्ती ओ अन्यशाखाक परिचय एहि वंशावलीमे रहितो, मकवानपुर एवं हरिहर इन्द्रक सम्बन्धमे अधिक तथ्यात्मक ओ विश्वसनीय अछि ।

एहि वंशक बीजी पुरुष राजस्थानक कुंभलमेरु नामक स्थानक सिसौदिया क्षत्रियवंशक कहल गेल छथि । इतिहासकारक अनुसार अल्लाउद्दीन खिलजीक चित्तौर आक्रमणक पश्चात् मदनरायकक सन्तान अन्य राजपूत योद्धासभक संग हिमालय प्रदेशमे पलायन कयलनि एवं जेना-तेना अपन राज्य स्थापित कयलनि । एहि वंशक चारिम पुरुष अभयराणा मकवानपुरवासी राजलक्ष्मण सिंह नामक मगरमहीपालक कांतिमती नामक कन्यासँ विवाह कयलनि आ प्रायः श्वसुरक उत्तराधिकारी नहि रहबाक कारणे अभयराणा ओतहुक राजा भेलाह । अभयराणाक एगारहम पीढ़ीमे रुद्रसेन भेलाह । रुद्रसेनक एकटा दानपत्र संवत् १५७१क उपलब्ध भेल अछि जाहि आधारपर बाबू राम आचार्य हिनक समय १४८३ ई० सँ १५१८ ई० धरि निश्चित कयलनि अछि । रुद्रसेनक पुत्र छलाह मुकुन्दसेन । वंशावलीमे पूर्ववर्त्ती अन्य व्यक्तिक अपेक्षा हिनका लेल अधिक विशेषणक प्रयोग भेल अछि––'विविध बिरुदावली विराजमान मानोन्नत श्री मन्महाराजाधिराज पर्वतैकवात्साह हिन्दूपति राजराजेश्वर' । बाबू राम आचार्य हिनक शासनकाल १५१८ ई० सँ १५५३ ई० धरि निश्चित कयलनि अछि (भानभक्त-स्मारक ग्रन्थ, पृ० ६५–६६) ।

नेपालमे लिखित 'भाषावंशावली' नामक ग्रन्थक अनुसार काठमांडूक राजा रत्नमल्लक शासन-कालमे भोट सभ द्वारा जखन बड़ उपद्रव कयल गेल तँ चारिजन तिरहुतिया ब्राह्मणक माध्यमसँ पालपाक राजाक सहायताक याचना कयल गेल । पालपाक शासकलोकनि ओहि ब्राह्मण सभक शिष्य छलथिन । पालपाक शासक ओहि निवेदनकेँ स्वीकार कऽ रत्नमल्लक सहायता कयलथिन । पालपापर मकवानपुरीय सेनवंशक मकुन्दसेनक शासन छल तँ स्वतःसिद्ध अछि जे मुकुन्दसेने ई सहायता देने छलथिन । अतः मुकुन्दसेनोक कालमे तिरहुतिया ब्राह्मणक वर्चस्व सेनराज सभामे स्थापित छल आ एहि कूटनीतिक दौत्यवर्यासँ काठमांडूओमे सम्मान एवं प्रतिष्ठा भेलनि ।

ई मुकुंदसेन विजयी ओ पराक्रमीक संगहि त्यागी, विद्याप्रेमी ओ भगवद्भक्त छलाह । पराक्रमक बलपर एकटा विशाल भूभागमे अपन शासन स्थापित कयलनि । परन्तु मृत्युसँ पूर्व अपन समस्त राज्यकेँ पुत्र, भातिज तथा नातिसभमे विभक्त कऽ स्वयं तपस्या करैत दिवंगत भेलाह । यदि अपन राज्यकेँ ओ एना विघटित नहि कयने रहितथि तँ हुनक स्थान नेपालक इतिहासमे वैह रहैत जे पाछाँ कतोक शताब्दी बाद गोरखा राजा पृथ्वीनारायणकेँ भेटलनि ।

मुकुंदसेनक तेरह गोट बेटा छलनि जकरा वयस एवं योग्यतानुसार विभिन्न राज्यखंड सभ देल गेलनि । एहिमे एकटा बेटा छलथिन लोहाङ्गसेन । हिनका मकवानपुरक राज्यखंड भेटलनि । भवदत्त नामक व्यक्ति द्वारा संस्कृत-श्लोक-निबद्ध एकटा दोसर सेन वंशावलीमे कहल गेल अछि––

पाल्पांपुरीं मानिकसेन आवसद्विहंगसेनस्तमहूमपालयत् ।
लोहंग सेनो मकवान नामकंपुरं जुगोपापरिमेय विक्रमः ॥

लोहाङ्गसेन अपन विक्रमसँ राज्य-सीमामे बढ़ोत्तरी कयलनि । अधवारा नदी पारकऽ कोसीक पूर्वीय क्षेत्र मोरङ धरि अधिकार कऽ लेलनि । महोत्तरीक मोह

ठाकुरकें पराजित कयलनि, मोरङ.क राजा विजयनारायणकें पराजित कऽ राजधानी विजयपुर सहित सौंसे मोरङ.पर अधिकार कयलनि। एही क्रममे कोरानी, खेसराहा, रामपुर, पोखारी, झामना, जोगोड़ा, घापर, कलिसा, बेल्काकोट, सम्दा, करजैन, मेघवारी इत्यादि कोसी-क्षेत्रक स्थानक छोट-छोट राजा, सामन्त ओ जमीन्दारसभकें पराजित कऽ अपना अधिकारमे करैत गेलाह। लोहांगसेनक मृत्यक पश्चात् हिनक राज्य मकवानपुर ओ चौदण्डी नामसँ विभक्त भऽ गेल। चौदण्डी अपेक्षाकृत छोट राज्य छल। विजयपुरसँ उत्तर भागक समस्त मोरङ.-इलाका मकवानपुरक अधीन रहल।

लोहाङ्गसेनक पाँच गोट पुत्र छलथिन जाहिमे सभसँ ज्येष्ठ पुत्र राघव नरेन्द्र मकवानपुरक राजा भेलाह। मकवानपुरीय नृप वंशावलीमे हिनका सम्बन्धमे कहल गेल छनि--

'विजयादुत्तरतोदेशे मोरंग संज्ञके राघवनरेन्द्रो नाम राजा सर्वजनप्रियः।'

एहि राघवनरेन्द्रक दुइ गोट पुत्र छलथिन--हरिहर इन्द्र सेन तथा कृष्णसेन। राघवक पश्चात् हरिहर इन्द्र सेन मकवानपुरक राजा भेलाह। हिनक माताक नाम छलनि दुर्गावती तथा मातामह छलथिन समालवासी ज्ञानमल्ल। वंशावलीमे हरिहर इन्द्रकें अन्य परंपरित विरुदक संग 'पर्वतैक पातसाह-हिन्दूपति--राज राजेश्वर--मकवानी कुलावतंश' कहल गेल छनि। एहन विरुद हिनक पूर्वज मकुंद सेनेकें देल गेल छनि से विचारणीय अछि। ताहूमे 'मकवानी कुलावतंश' सौंसे वंशावलीमे केवल हरिहरेक हेतु प्रयुक्त भेल अछि। ई हरिहरसेनक वैशिष्ट्य सूचित करैत अछि।

मकवानपुरीय नृप वंशावलीमे हरिहर इन्द्रक अपन परिवारक परिचय देबा काल पुनः पुनः विरुदावलीक प्रयोग करैत हिनक पत्नी एवं पुत्र-पुत्रीक परिचय देल गेल अछि। प्रस्तुत सन्दर्भमे हरिहरक पत्नी एवं पुत्र सभक परिचय महत्त्वपूर्ण प्रमाण सिद्ध होयत तें वंशावलीक मूल वाक्य उद्धृत कऽ देब अधिक उपयोगी होयत--

अथ रूपनारायणेत्यादि महाराजाधिराज हिन्दूपति-राजराजेश्वर--श्री हरिहर-इन्द्रमुता--

(१) रूपनारायणेत्यादि महाराजाधिराज हिन्दूपति--राजराजेश्वर-श्री छत्रपति इन्द्र--श्री पद्मवतीइन्द्र देवौ महादेवी-पट्टमहिषी श्री माहेश्वरी देवी पुत्रो।

(२) पूर्व देशीय वणि प्राणनाथ साह दौहित्रौ यशोदरा सुतश्च महाराजकुमार श्री हिन्दूपति कुमार--श्री हिन्दूपति कुमारी जीउ जमली राजा श्रीकृष्णसाह सुत--श्री कल्याणसाह पत्नी।

(३) अपरे रूपनारायणेत्यादि महाराजाधिराज वरकुमार श्री वासुदेवसेन महादेवी संकुतला राज्ञी पुत्रः खेनजान जाती दास दौहित्र।

(४) रूपनारयणेत्यादि महाराज श्री शभसेन देवः महादेवी श्री महाराणीधिराणी पुत्र कामरूपी विहारवासी श्री लक्ष्मीनारायण सुत--श्री वीरनारायण दौहित्र महाराज प्राणनारायणस्य भागिनेयः।

(५) अपरा श्री हिन्दूपति हरिहर इन्द्र पत्नी श्री जगन्माता तस्य सुता श्री महाराजाधिराज कुमारी जीउ विशेन राजपुत्र महाराज दंडसाहि सुत श्री कीर्त्तिसाह पत्नी।

(६) अपरा श्री हिन्दूपति हरिहर इन्द्र पत्नी श्री पट्टमहिषी।

(७) अपरा श्री हिन्दूपति हरिहर इन्द्र पत्नी श्री लक्ष्मावती राजराजेश्वरी तस्य सुता प्राणमती कुमारी जीउ--श्री राजमती कुमारी जीउ--आद्या श्री वासुदेव मल्लसुत--श्री प्रतापमल्ल पत्नी--अपरा श्री ज्ञानमल्लसुत--मोहनमल्ल पत्नी।

अर्थात् हरिहरसेनक सात गोट पत्नी छलथिन जाहिसँ चारि गोट पुत्र एवं पाँच गोट कन्या भेल छलथिन--

१. माहेश्वरी देवी--पुत्र छत्रपति इन्द्र, पुत्री पद्मावती इन्द्र।

२. यशोदरा--पुत्र हिन्दूपति कुमार पुत्री हिन्दूपति कुमारी।

३. शकुंतला--पुत्र वासुदेवसेन।

४. महाराणीधिराणी--पुत्र शुभ सेन देव।

५. जगन्माता--पुत्री अधिराज कुमारी।

६. पट्टमहिषी--

७. लक्ष्मावती--पुत्री प्राणमती एवं राजमती।

एहि उद्धरण ओ परिचयक आलोकमे पारिजातहरणमे उल्लिखित अन्तःसाक्ष्यकें देखने सभ तथ्यक मिलान भऽ जाइत अछि। प्रस्तावनाक सूत्रधार वाक्यमे उल्लिखित 'हरिहरदेव' तथा सौंसे नाटक मे बहुबार प्रयक्त हुनक विरुद 'हिन्दूपति' एतऽ एकत्रैव भेटैत अछि। हुनक चारि गोट रानी माहेसरि देइ, जगमातादेइ, पटमहिषीदेइ तथा महारानि उपर्युक्त वंशावलीमे क्रमशः प्रथम, पाँचम, छठम तथा चारिम थिकीह। माहेश्वरी देवी ज्येष्ठा पत्नी छलथिन तें हिनका 'महादेवी पट्टमहिषी' विशेषण देल गेल छनि। पारिजात-हरणमे बेसी बेर हिनके नामक उल्लेख अछि। किन्तु छठम रानीक नामे छलनि पट्टमहिषी जे वंशावलीक वाक्यसँ स्पष्ट अछि। तें पारिजातहरणमे पट्टमहिषीक नामक आगाँ 'देइ' शब्दक प्रयोग भेल अछि। पारिजातहरणक बारहम शीतक भणिताक चरण अछि--

ग रु उमापति हरि होएब परसन मान
होएब अवसान।
सकल नृपति पति हिन्दूपति जिउ महारानि
विरमाने॥

एहिठाम 'महारानि' व्यक्तिवाचक संज्ञा थिक जे हरिहरसेनक चारिम रानीक नामक रूपमे आयल अछि।

पारिजातहरणमे छौ ठाम हिन्दूपतिक संग 'जिउ' शब्दक प्रयोग भेल अछि। वंशालीमे सेहो हिन्दूपतिक पुत्री सभक लेल 'जीउ' शब्दक प्रयोग भेटैत अछि। एतऽ ईहो सूच्य अछि जे वंशावलीमे हरिहरदेवक परिवारक अतिरिक्त आन ककरो लेल एहि शब्दक प्रयोग नहि देखल जाइछ।

कविशेखर बदरीनाथ झा उमापतिक एकटा स्फुट तीत 'गीतरत्नावली'मे देने छथि जकर भणितामे देल अछि--

छत्रपति भूप रसिक रसविन्दक
सुमति उमापति भान।

हरिहर इन्द्रक सभसँ ज्येष्ठ पुत्र वंशावलीमे छत्रपति इन्द्र कहल गेल छथि जे ज्येष्ठा महारानी माहेश्वरीक पुत्र छलथिन। हरिहरक हेतु जे विरुद एवं विशेषणक प्रयोग भेल अछि से सभ छत्रपतिहुक लेल भेल अछि। हिनक आन वैमात्रेय भाइ सभक लेल एहन विरुदावलीक प्रयोग नहि भेल अछि जे उपर्युक्त उद्धरणसँ स्पष्ट अछि। एहिसँ ई अनुमान कयल जा सकैछ जे ओ हरिहर सेनक घोषित भावी उत्तराधिकारी छलाह, तें राजत्वक समस्त प्रक्रियाक अधिकारी छलाह। भगवानपुरक भावी उत्तराधिकारी होयबाक कारणें नृपवत् कार्य करैत छल होयताह। उमापति हिनके उल्लेखपूर्वक भणिता दऽ कऽ एकटा गीतक रचना कयने छलाह, जे गीत कविशेखर बदरीनाथ झा 'गीतरत्नावली'मे देने छथि।

आब देखल जाय जे उमापति अपन कृतिमे जतेक अन्तःसाक्ष्य देने छथि से सभ मकवानपुर वा मकवानीक राजा हरिहर इन्द्रपर घटित होइत अछि तें उमापतिक आश्रयदाता यैह सिद्ध होइत छथि, कर्णाट वंशीय हरसिंहदेव अथवा बुन्देलखंडक राजा हिन्दूपति नहि।

एहि ठाम तीन गोट बिन्दुक व्याख्याक अपेक्षा रहि जाइत अछि--हिन्दूपति विरुद, हरिहरक हेतु 'दशमावतार'क उपमा तथा नान्दीक प्रथम श्लोकमे वराहभगवानक स्तुति।

प्रथम विन्दुक सम्बन्धमे नेपाली इतिहासकार द्वारा देल सूचनासँ प्रकाश पड़ैत

(शेष पृष्ठ 24 पर)

शक्ति तत्त्व

(पृष्ठ ११ क शेषांश)

धर्म नहि होयत। हुनका भगवतीक सात्विक उपासना करबाक चाही। जे सात्विक वृत्तिवला छथि, हुनका लेल तन्त्रमार्ग धर्म नहि होयत। अस्तु, जे कोनो मार्ग हो, मिथिलामे दुनूक पूर्णरूपेण उपासना होइत अछि आ तेँ मिथिला प्रशस्त सिद्धपीठ मानल जाइत अछि। मात्र मिथिले टामे नहि, भारतक अन्यो प्रान्तमे हिन्दू मात्र कोनो-ने-कोनो रूपमे शक्तिक उपासना करैत अछि आ नवरात्रमे खूब धूमधामसँ सोल्लास ई पर्व मनाओल जाइत अछि।

नवरात्र-क्रममे दशमी तिथिकेँ बड़ महत्त्व देल गेल अछि। भविष्योत्तर पुराणमे एकर वृत्तान्त वर्णित अछि। चिन्तामणिमे एहि दशमी तिथिकेँ विजया-दशमीक संज्ञा देल गेल अछि।

"आश्विनस्य सिते पक्षे दशम्यां तारकोदये।
स कालो विजयो नाम सर्व-कामार्थसाधकः॥"

आश्विन मासक शुक्ल पक्षक दशमीक नक्षत्रक उदय भेलापर विजय नामक काल होइछ, जे सर्वकामप्रद होइत अछि। शत्रुपर विजय प्राप्त करबाक इच्छावला राजाकेँ एही कालमे प्रस्थान करबाक चाही। श्रवण नक्षत्रक योगसँ आरो उत्तम मानल जाइत छैक। मर्यादा-पुरुषोत्तम राम समस्त वानरी सेनाकेँ लऽ आश्विन शुक्ल दशमीकेँ श्रवण नक्षत्रयुक्त रात्रिमे प्रस्थान कऽ लंकापर आक्रमण कयलनि आ विजय प्राप्त भेलनि। तेँ हेतु ई दिन पवित्र मानल गेल अछि। क्षत्रिय राजा सभ सीमोल्लंघनक काजमे एही दिनकेँ शुभ माननलनि अछि। शत्रुसँ युद्ध करबाक प्रसंग नहियोँ रहलापर एहि दिन सीमोल्लंघन करबाक चाही से विधान अछि। सीमोल्लंघन कऽ कतहु जाकऽ शमीवृक्षक पूजा करबाक चाही। रामचन्द्रक लंका प्रस्थानक समय 'अहाँक विजय होयत' से शमीवृक्ष कहने छलनि। तेँ शमीवृक्षक पूजाक विधान कहल गेल अछि।

विजयादशमी दिन पूर्ण सज्जित भऽ जे राजा सीमोल्लंघन कऽ शमीपूजन कऽ शस्त्रपूजन कऽ आदि कऽ पुनः अपन सीमामे आबि जाइत अछि तकर सदा शत्रुपर विजय होइत रहैत छैक से कहल गेल अछि। अस्तु, विजयैपी साधारणो व्यक्तिकेँ नव वस्त्र, आभूषण आदि धारण कऽ सीमोल्लंघन करबाक चाही आ एहि प्रकारेँ जीवन भरि विजय आ सफलता भेटबाक कामना करबाक चाही, सैह मन्तव्य छैक। देवी नवरात्र समाप्त भेलेपर दशमीकेँ सीमोल्लंघन कयल जाइछ। अनेक प्रान्त रामक उक्त कथाक आधारपर रामलीला आदिक आयोजन कयल जाइत अछि। प्रायः ओहो कोनो-ने-कोनो रूपमे शक्तिऐक उपासना होइत अछि।

जे किछु हो, नवरात्रक समस्त आख्यान शक्ति-उपासनाक आख्यान थिक। भारत वीर आ शान्तिप्रिय देश रहल अछि। शक्तिसँ सुख समृद्धि बढ़ैत छैक। अतः प्रत्येक भारतीयकेँ शक्तिक उपासना कऽ वीरता आ शान्तिभावक प्राचीन गौरवकेँ अपनयबाक चाही जाहिसँ मनुष्य मात्रक जीवन समृद्ध आ सुखपूर्ण भऽ सकय। आ शक्तिऐक उपासना कऽ त्रिविध तापकेँ शान्त करबाक लेल 'ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः' ई मन्त्र चर्तुदिक उच्चरित होअय।

केन्द्रीय विद्यालय, दानापुर, पटना।

उमापतिक आश्रयदाता

(पृष्ठ १4 क शेषांश)

अछि। बालचन्द्र शर्मा सूचना देने छथि— 'राघव सेन का छोरा हरिहर सेनले गोण्ड-वारा सम्म विजय गरेर 'हिन्दूपति' को उपाधि ग्रहण गरे।'

गोण्डवारा धरि विजय कऽ कऽ हिन्दू-पति उपाधिधारण कयलनि। ई गोण्डवारा पूर्णिया जिलामे एकटा कस्बा अछि आ आ ईस्टइंडिया कम्पनीक शासनकाल धरि एकटा प्रमुख नगर ओ सबडिविजनक केन्द्र छल। ओहि कालमे पूर्णियाक नबाब छल संभवतः इस्कन्दर मिर्जा। एकटा हिन्दू राजा मुसलमान नबाबक सेनाकेँ पराजित कऽ उचिते 'हिन्दूपति' उपाधि ग्रहण कयल। हरिहरक प्रपितामहकेँ सेहो ई उपाधि छलनि। किन्तु हरिहरक पश्चात वंशक प्रत्येक राजाक स्थायी विरुद हिन्दूपति भऽ गेल। मकवानपुरक एहि शाखाकेँ हिन्दूपति वंश सैह कहल जाय लागल। मोरंगमे हरिहर जे गढ़ बनबौलनि अथवा जाहि गढ़मे अवस्थान कयलनि तकर नामे पड़ि गेल हिनपतगढ़ (हिन्दूपतिगढ़) जकर अवशेष औखन विद्यमान अछि। पृथ्वी नारायण शाह एहि वंशक राजाकेँ पराजित कयने छलाह से अपन अन्तिम समयमे बड़ा गौरवपूर्वक उल्लेख करैत कहने छलाह—— 'हिन्दूपति को राज लिया।' (दिव्यउपदेश- ——पृथ्वीको अर्ति, पृ० १)।

'स्याहामोहर' नामसँ अनेको दान पत्र सभ उपलब्ध भेल अछि जे पुरातत्त्व पत्र संग्रह, भाग-२ मे प्रकाशित भेल अछि। ओहिमे हरिहरक वंशधर राजासभ अपना हेत 'हिन्दुपति' विरुदक प्रयोग कयने छथि।

हिंदुपति उपाधि धारण करबाक पाछाँ रहल होयत हुनका द्वारा हिन्दू जातिक यवन जातिसँ रक्षाक महान एवं सफल प्रयास, जाहिमे अन्यो समकालिक राजा-सभक सहयोग भेटल छलनि। तेँ हिन्दू-धर्मक रक्षक रूपमे प्रशस्ति-वाचन करैत उमापति हरिहरदेवकेँ विच्छेदगत चतुर्वेद-पथ-प्रकाशक प्रताप कहलनि। मुकुन्दसेन पार्वत्यशक्तिपुंजक रूपमे उदित भेल छलाह, जकरा पुष्ट कयलनि हुनक पुत्र लोहाङ्ग सेन। हरिहरदेवकेँ पिता-पितामहसँ जे प्रतिपत्ति भेटल छलनि तकरा संगहि स्वयं सेहो पराक्रमी छलाहे। कामरूपक कोचराज वंशक संग हरिहर देवक ओ काठमांडूक प्रताप मल्लक वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित भेलासँ पूर्वोत्तर भारतमे त्रिकोणात्मक शक्ति-संघटन स्थापित भऽ गेल। फलस्वरूप हरिहर देव आरो शक्ति-सम्पन्न भऽ गेलाह। सेनवंशक अन्य समस्त शाखा राज्य—— पालपा, तनहू, रिसिङ, दरछा, मदरिया, प्यूठान, राजपुर इत्यादिक मध्य हरिहर देवक मकवानपुरक वर्चस्व सर्वोपरि भऽ गेल। ओही कालमे मोगल साम्राज्यक सीमामे दिल्लीक बादशाहक प्रतिनिधि द्वारा हिन्दू जातिपर अत्याचार कयल जाइत छल जकर प्रतिकारक हेतु हरिसिंह देव हिन्दू राजाक सहयोग सँ शस्त्र उठौलनि आ पूर्णियाँ नवाब सरकारक सेनाकेँ गोण्डवारा धरि खेहारि कऽ पराजित कयलनि। ओहि समयमे पूर्णियाक नवाब के छल से पता नहि अछि। किन्तु हरिहरक मृत्युक समयमे इस्कन्दर मिर्जा नामक नवाब छल जकर उल्लेख नेपाली इतिहास-कार करैत छथि। संभव अछि जे इस्कन्दर मिर्जासँ पूर्व कोनो दोसरे नवाब नियक्त रहल हो। किन्तु हरिहरक मृत्युक बाद इस्कन्दर मिर्जा हुनक पुत्र शुभसेन ओ पौत्र इन्दुविधाता सेनकेँ षडयन्त्र द्वारा पकड़ि दिल्ली पठबाय जेना जातिच्युत करबौलक ताहिसँ अनुमान होइत अछि जे प्रायः वैह हरिहरदेवक हाथेँ पराजित भेल छल, जकर बदला ओ बादमे शुभसेनसँ लेलक।

हरिहर देवक यवन विजयक घटना अनुमानतः १६४०-५० ई०क मध्य भेल होयत। ओही विजयक उपलक्षमे उमा-पतिक पारिजात-हरण नाटकक रचना ओ अभिनय भेल छल। एहि नाटकमे सूत्रधार कहैत अछि——

'आदिष्टोऽस्मि. . .हिंन्दूपति हरिहर देवेन यथा उमापत्युपाध्याय विरचितं नव पारिजात मङ्गलमभिनीय वीररसावेशंशम-यन्तु भवन्तो भूपाल मण्डलस्य।'

भूपालमण्डलक वीर रसावेशक शमन करबाक सूचनामे हरिहरक अन्य राजाक सहयोग द्वारा यवन-विजय कयलाक बादक स्थिति सूचित होइत अछि। अन्य राजन्य वर्गपर हरिहर देवक वर्चस्व छल, से नान्दीक दोसर श्लोकमे 'राजराज्यस्त-

टिन्य:रुतथा गीत सभमे 'सकल नृपति पति', 'सकलनरेश मुकुटमनि' इत्यादि उक्तिसँ सम्पुष्ट होइत अछि ।

मुसलमान नवाबकेँ पराजित कयनिहार हरिहर इन्द्रकेँ विष्णुक दशाम (कल्कि) अवतार मानब समीचीन अछि । पारिजातहरणमे उमापति कतोक बेर हिन्दूपति हरिहर देवकेँ यवनक विनाशक, यवनरूपी वनक हेतु दावानल सदृश कहने छथि जे इतिहाससँ सम्पुष्ट अछि । जयदेव अपन गीतगोविन्दक दशावतार-स्तुतिमे कहने छथि--

म्लेच्छ निवह निधने कलयसि करवालम् ।
धूमकेतुमिव किमपि करालम् ।।
केशवधृत कल्कि शरीर जय जगदीश हरे ।।

एहि ठामक 'कराल' ओ 'करवाल' शब्दकेँ लऽ कऽ उमापति हरिहरदेवक हेतु कहलनि--'यवनवनच्छेदन कराल -करवाल' ।

जयदेवक 'म्लेछ'क स्थानमे उमापतिक कालमे 'यवन' स्थानापन्न भऽ गेल ओ तकर अर्थ लेल जाइत छल 'मुसलमान' । एकर समर्थन ओही कालक नेपालक राजा जगज्ज्योतिर्म्मल्ल द्वारा रचित दशावतार गीतक कल्कि वन्दनामे भेटैत अछि--

कल्कि अन्त अधरम परिपूर ।
कलकि सरूपे कएल सबे दूर ।।
कर करवाल तरग वर साजि ।
पूहवि वल रण कैए विराजि ।।
उग्रप्रतापे यवन कुल मारि ।
संतक संकट लेल उवारि ।।
कतहु भयंकर कतहु कृपाल ।
संभल गाम लेल अवतार ।।

अत: उमापतियो अपन आश्रयदाताक यवन-विजयकेँ कल्कि-अवतारक एक टा कार्य मानि हुनका विष्णुक दशम अवतार कहलनि ।

पारिजातहरण नाटकक नान्दीमे वराह भगवानक स्तुति सहेतुक अछि । प्रसिद्ध तीर्थस्थान वराह क्षेत्र मकवानपुर राज्यक सीमामे स्थित छल । अत: ओहि राज्यक राजा ओ प्रजाक पूज्य छलाह वराह भगवान । एकरा संगहि ईहो कहल जाइत जे हरिहरक पितामह लोहाङ्ग सेन वराह भगवानक स्थापना कयने छलाह (हिस्ट्री एण्ड कल्चर आफ किरात पीपुल, भाग--२, पृ. ६३) । अत: मकवानपुर राज्यक राज-सभामे अभिनेय नाटकमे ओहि राज्यक अधिदेवताक सर्वप्रथम स्तुति करब आश्रित कविक हेतु सर्वथा स्वाभाविक ।

हिन्दूपति हरिहरक समकालिक घटना सभक सम्बन्धमे बड़ कम ऐतिहासिक तथ्य प्रकाशमे आयल अछि । गोण्डवारा धरि विजय कऽ कऽ हिन्दूपति उपाधि धारण करबाक घटनाक उल्लेख ऊपर कयल गेल अछि । एकरा अतिरिक्त नेपाली इतिहासकारलोकनि हरिहरक जीवनक अन्तिम कालक गृह-कलहक उल्लेख कयने छथि । बालचन्द्र शर्माक कथ्य छनि जे हरिहर सेनक वृद्धावस्थामे हुनक चारि गोट पुत्रमे पैतृक राज्यक हेतु बड़ आपसी कलह भेल छलनि । हुनका किछु समय धरि बेटा सभक कैदखानामे सेहो रहऽ पड़लनि । अन्ततः अपन राज्यक कोसीसँ पश्चिमक इलाका शुभसेनकेँ तथा कोसीसँ पूर्वक मोरङ. इलाका अपन ज्येष्ठ पुत्र छत्रपति इन्द्रक नवजात पुत्र इन्दुविधाता सेनकेँ दऽ देलथिन । तकरा पश्चाते हुनक मृत्यु भऽ गेलनि (नेपालको ऐतिहासिक रूपरेखा, पृ० २०६) ।

दिल्लीरमण रेग्मी किछु प्राचीन अभिलेख सभक आधारपर सूचना देने छथि जे नेपाल संवत् ७९० (१६७० ई०) मे माघ कृष्ण चतुर्थीकेँ काठमाण्डूक प्रताप मल्ल ओ पाटनक श्रीनिवास मल्लक संयुक्त तत्वावधानमे मकवानपुरपर आक्रमण कयल गेल किन्तु से असफल रहल । ने० सं० ७९१ (१६७१ ई०)क चैत्र मासक कृष्णपक्षमे श्रीनिवास मल्ल मोरंगक हरिहर सेनक पुत्र महाराज कुमार शुभसिंह (सेन)पर आक्रमण कयल ओ जगाबनिया शुभसेनकेँ पकड़ि लेलक । ओही वर्ष ज्येष्ठ कृष्ण बधकेँ श्रीनिवासक चारि मंत्री ओ १०० सैनिक, गोरखाक मुरारि साही एवं जगाबनिया मकवानपुर दिस आक्रमण हेतु प्रयाण कयलक किन्तु ई प्रयाण बीचेमे रुकि गेल । ने० सं० ७९४ (१६७४)क आसिन मासमे मकवानपुरपर हरिहर सेनक आक्रमणक खतरा उपस्थित भेल तँ शुभसेनकेँ पाटनसँ साहाय्य भेटलैक । श्री निवास मल्लक प्रेरणासँ भक्तपुर, काठमाण्डू, एवं तनहूँ (सेन वंशक एक टा शाखा राज्य) सम्मिलित आक्रमण कऽ शुभ सेनक मोरङ. द्वारा अपहृत १७ गोट गाम पुनः आपस दिया देल । शुभसेन एतदर्थ कृतज्ञता ज्ञापन हेतु चारि गोट हाथी श्री निवास मल्लकेँ प्रदान कयल । (मेडिएवल नेपाल, भाग--२, पृ. २६५--६७) ।

एहि समस्त सूचनामे अनेकश: अन्तविरोध देखऽमे अबैत अछि । एहि सभक आधारपर ई निष्कर्ष निकालल जा सकैत अछि जे हरिहरदेव अत्यन्त शक्तिशाली राजा छलाह तेँ दिल्ली बादशाहक प्रतिनिधि पूर्णियाँक नवाबपर आक्रमण करबाक साहस कऽ ओकरा पराजित कयलनि । काठमांडू उपत्यकाक मल्लराजालोकनि एवं सेनवंशक अन्य शाखा राज्यकेँ हरिहरक विरुद्ध किछु करबाक बजबाक साहस नहि होइत छलैक । हरिहरक वृद्धावस्थामे हुनक पुत्रसभमे राज्यांशक लेल कलह आरम्भ भऽ गेलनि । एहि कलहक कारण रहल होयत जे हरिहर अपन वंशपरम्पराक अनुसार राज्यक विभाजन नहि कऽ अपन ज्येष्ठ पुत्र छत्रपति इन्द्रकेँ मकवानपुरक राजा बनबऽ चाहैत छल होयताह । एहीपर अन्त:संघर्ष आरम्भ भेल होयत । ई अन्त:-संघर्ष स्वत: उद्भूत नहि भ: अन्य प्रतिवेशी राजा द्वारा प्रेरित सेहो भऽ सकैत अछि ।

एहि संघर्षमे मल्ल राजासभ काठमांडूक नेतृत्वमे शुभसेनक पक्ष लेलक । एही क्रममे शुभसेन मकवानपुरपर अधिकार कऽ लेलक ओ छत्रपति इन्द्रक मृत्यु भऽ गेलैक । से खाहे ओकर हत्या कऽ देल गेल होइक वा आपसी युद्धमे वा काठमांडूक आक्रमणक प्रतिरोधात्मक युद्धमे मारल गेल । ओही क्रममे हरिहर सेन प्राय: शुभसेन द्वारा बन्दी बना लेल गेलाह । विवश भऽ कऽ हरिहरसेनकेँ राज्यक विभाजन करऽ पड़लनि । कोसी नदी सीमारेखा भेल । ओकर पश्चिमक मकवानपुर धरिक क्षेत्र शुभसेनकेँ देल गेल तथा पूर्व पारक मोरङ. इलाका छत्रपतिक अभावमे हुनक नवजात पुत्र इन्दुविधाता सेनकेँ ।

एहि नाटकक अन्तिम दृश्य १६७४ ई० मे भेल जाहिमे शुभसेनकेँ १७ गाम आर हस्तगत भेलैक ओ प्राय: एही वर्ष हरिहर सेनक मृत्यु भेल ।

शुभसेनकेँ एहि पितृद्रोहक कुफल सेहो भेटलैक । पूर्णियाँक नवाव इस्कन्दर मिर्जा अपन पूर्व पराजयकेँ विस्मृत नहि कयने छल । किन्तु हरिहर सेनक जीवनकालमे किछु करबाक साहस नहि भेलैक । हरिहरक मृत्युक पश्चात् ओ षड्यन्त्र कऽ शुभसेनक मन्त्री सभकेँ अपना दिस मिलाकऽ आक्रमण कऽ देलक । आरम्भमे सेन सभक विजय भेलैक परन्तु अन्ततोगत्वा इस्कन्दर मिर्जा शुभसेनकेँ पराजित कऽ इन्दुविधाता सेन सहित कैदी बनाकऽ दिल्ली पठा देलकैक जतऽ दुनूकेँ जातिच्युत कऽ देल गेल । शुभसेनक एक टा विश्वस्त मन्त्री प्रबोधदास शुभसेनक दुइ बेटा महिपति सेन वा मान्धाता सेन एवं मानिक सेनकेँ लऽकऽ किरात प्रदेशमे शरण लेलक तथा किराती सरदार विद्याचन्द्र राइक सहयोगसँ पुनः राज्यपर अधिकार कऽ कमलासँ पश्चिम भागपर मानिक सेनकेँ तथा कमलासँ पूर्वक अवशिष्ट भागपर महिपति सेनकेँ स्थापित कयलक ‖

प्रताप मल्लक मकवानपुरक आन्तरिक पारिवारिक कलहमे भागीदार बनबाक कारण स्पष्ट अछि । ओ नहि चाहैत छलाह जे ओ प्रतिवेशी राज्य बेसी सशक्त होइक । आ, एहिमे पाटन, भक्तपुर ओ तनहूक

सेहो समान स्वार्थ छलैक । एहि अन्तः-संघर्षमे प्रताप मल्ल शुभसेनक पक्षपाती छलाह । शुभसेन छलाह कुचबिहारक राजा लक्ष्मीनारायणक पुत्र वीरनारायणक दौहित्र एवं प्राणनारायणक भागिन । हरिहरक सात गोट रानीमे एक टा महाराणी धिराणी छलथिन कोच-राजवंशक कन्या जनिक पुत्र छलाह शुभसेन ।

दोसर दिस प्रताप मल्लक दुइ गोट रानी रूपमती एवं अनन्तप्रिया सेहो छलथिन कोचराजा वीरनारायणक कन्या । अर्थात् हरिहरक पत्नी एवं शुभसेनक माता महाराणीधिराणी छलथिन रूपमती एवं अनन्तप्रियाक बहीन । अतः अपन पत्नी रूपमती ओ अनन्तप्रियाक प्रेरणासँ हुनक बहिनौत शुभसेनक पक्ष लेब प्रताप मल्लक लेल स्वाभाविक छल ।

हरिहर सेनक सम्बन्धमे जे किछु तथ्य जानल जा सकल अछि ताहि आधारपर हुनक समयक मोटामोटी अनुमान करब सम्भव अछि ।

ऊपर वंशपरिचयमे देखल गेल अछि जे रुद्रसेन एवं हुनक पुत्र मुकुन्दसेन ३५-३५ वर्ष राज्य कयलनि । मुकुन्द सेनक मृत्युवर्ष १५५३ ई० मानल गेल अछि । यदि राज्यशासनक यैह औसत अवधि लोहाङ्ग सेन एवं राघव नरेन्द्रोक मानल जाइनि तँ ओ ७० वर्ष होयत । अतः १५५३ ७०–१६२३ ई०क लगपासमे हरिहर सेनक राज्यारोहण भेल होयबाक चाही ।

हरिहर सेनक एक टा पत्नी कोचराजा वीरनारायणक कन्या छलथिन । एहि वंशक परिचय एडवार्ड गेट महोदय 'हिस्ट्री आफ आसाम' मे दैत लक्ष्मीनारायणक मृत्यु १६२२ ई० मे तथा वीरनारायणक मृत्यु १६२७ ई० मे मानलनि अछि । अनुमान कऽ सकैत छी जे वीरनारायणक मृत्यु वर्षसँ एक-दू वर्ष पूर्व वा पश्चात् हुनक कन्यासँ हरिहरक विवाह भेल होयतनि । ओ छलथिन चारिम पत्नी जे स्वेच्छासँ कयने होयताह आ राजत्व ग्रहणक ई स्वेच्छा पश्चाते भेल होयतनि । ओहि समयमे हुनक आयु कमसँ कम तीस-पैंतीस वर्षक अवश्य रहल होयतनि ।

दोसर दिस हरिहर सेन एवं प्रतापमल्ल छलाह साढ़ू । अतः दुहू समसामयिक एवं समवयस्क छलाह । प्रताप मल्लक राजत्व १६४१ ई० सँ १६७४ ई० धरि रहल । १६७० ई० सँ १६७४ ई० क मध्य हरिहर सेनक पुत्र सभमे कलह ओ शुभसेनक पक्षमे काठमांडू उपत्यकाक राजा सभक हस्तक्षेप भेल छल जाहि मध्य हरिहर सेनक मृत्यु भेल छल । अतः एहि तथ्यकेँ देखैत यदि हरिहर सेनक आयु ७५ सँ ८० वर्ष पर्यन्त मानी तँ हुनक जन्मकाल १५६५ ई० सँ १६०० ई०क अभ्यन्तर सिद्ध होइत अछि ।

एही समय सीमाक अभ्यन्तर उमापतिक स्थिति-कालक अनुमान करब सर्वथा सहज अछि । ऊपर अनुमान कयल गेल अछि जे हरिहर देवक यवन-विजय ओ हिन्दूपति उपाधि-धारणक घटना १६४०-५० ई०क मध्य भेल छल जाहि अवसरपर उमापति पारिजातहरणक रचना कयने छलाह एवं ओकर अभिनय भेल छल । पारिजातहरणमे उमापति अपनाकेँ 'सुमति' 'गुरु' 'सुगुरु' तथा 'पण्डित-मुख्य' कहने छथि । ई हुनक वार्धक्य सूचित करैत अछि । यदि १६५० ई० मे हुनक आयक परमावधि सत्तरि वर्ष मानी तँ हुनक जन्मकाल १५८०क आन-पौनमे भेल होयबाक चाही । कोनो स्थितिमे उमापतिक स्थिति-काल १५७० सँ पूर्व ओ १६७० ई०क पश्चात् नहि खीचल जा सकैत अछि ।

मैथिली-विभाग, मिथिला विश्वविद्यालय,
दरभंगा ।



नेताजी सुभाषचन्द्र बोस

''तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूँगा ।'' की अहाँ जनैत छी जे ई तुलंद आबाज ककर थिक ? ई तँ ओहि महापुरुषक आवाज थिक जे अपन सम्पूर्ण जीवन अंगरेजक विरुद्ध लड़ैत रहल, ओकरा समक्ष सदा अपन विरोध रखने रहल, जे जीवन भरि भारतमाताक पयरमे परतंत्रताक लटकल बेडीकेँ तोड़बाक लेल अथक प्रयास करैत रहल, जे असंख्य अंगरेज अफसरक आँखिमे धूरा झोंकि कहाँसँ कहाँ चल गेल । ओ देशक वीर पुरुष सुभाषचन्द्र बोस छलाह ।

नेताजी सुभाषचन्द्र बोसक जन्म २३ फरवरी सन् १८९७ मे बंगालक चौबीस परगना जिलाक कोडोलिया नामक गाममे भेल छलनि । हिनक पिताक नाम जानकीनाथ रहनि । ओहि समयमे जानकीनाथ उड़ीसाक राजधानी कटकमे ओकील रहथिन । हिनक माय बड़ धर्मपरायण महिला रहथिन । ओ अपन अधिक समय ईश्वरक चिंतनमे व्यतीत करैत रहथि ।

श्री सुभाषक समस्त परिवार सुशिक्षित एवं सुसंस्कृत छलनि । हिनक प्रारम्भिक शिक्षा कटकमे भेलनि । ई कटकक मिशनरी स्कूलसँ मैट्रिकक परीक्षा उत्तीर्ण कयलनि । एकर उपरान्त ई कलकत्ताक प्रसिद्ध प्रेसीडेंसी कॉलेजमे अपन नामांकन करौलनि आ प्रथम श्रेणीसँ एफ० ए० क परीक्षा उत्तीर्ण कयलनि । सन् १९१९ ई०मे ई अपन नामांकन स्थानीय स्कॉटिश चर्च कॉलेजमे करयलनि । ओतऽसँ बी० ए० क परीक्षामे ओ विश्वविद्यालय भरिमे प्रथम श्रेणीमे प्रथम स्थान प्राप्त कयलनि । बी० ए०क परीक्षा उत्तीर्ण कयलाक उपरांत ई एम० ए० क तैयारी करऽ लगलाह, मुदा पिताक आज्ञाक कारणेँ विलायत जाकऽ आई० सी० एस० क तैयारी करऽ लगलाह आ ओहि परीक्षामे शानदार सफलता प्राप्त कयलनि । आइ० सी० एस० क सफल व्यक्तिक श्रेणीमे हिनक चारिम स्थान छलनि । एतबे नहि, ओ कैम्ब्रिज कॉलेजमे प्रविष्ट भऽ कऽ मनोविज्ञान आ नीतिशास्त्रमे ''ट्राइपास'' कोर्स प्राप्त कयलनि । आ ओतऽसँ ग्रेजएटक उपाधि प्राप्त कऽ एक टा नव कीर्तिमान स्थापित कयलनि । ओहि समयमे प्रेसीडेन्सी कॉलेजमे मिस्टर ओटन नामक एक दुष्ट प्राध्यापक छल, जकर व्यवहार भारतीय विद्यार्थीक प्रति दुष्टतापूर्ण रहय । सुभाष बाबू सन स्वाभिमानी एकरा कोना सहन कऽ सकैत छलाह ? ओ ओहि प्राध्यापककेँ नीक जकाँ पिटाइ कऽ देलथिन यद्यपि ओहि कार्यक फलस्वरूप ओ दू बर्षक हेतु कॉलेजसँ निष्कासित कऽ देल गेलाह, मुदा हुनक मुखमण्डलपर कोनो पश्चात्तापक रेखा नहि अयलनि । हुनक मुखमण्डल पहिने जकाँ गुलाबक फुलायल फूल जकाँ जगमगाइत रहलनि ।

सन् १९२१ ई० मे रौलट बिल पंजाब हत्याकांड, मार्शल लाँ इत्यादि दमनकारी नीतिसँ समस्त भारतमे जागरणक अपूर्व लहरिक उद्भव सुभाष बाबूकेँ स्वतन्त्रता-आन्दोलनमे सहयोग देबाक कारणे आन्दोलनकेँ एकटा नवजीवन प्राप्त भेलैक । बापूक आग्रहपर ओ आई० सी० एस०क पदक त्याग कयलनि आ स्वतंत्रता-आन्दोलनमे कूदि पड़लाह । सुभाष बाबूक शब्दमे